

पाठ—15 भोर और बरखा
कवियत्री मीराबाई

मीराबाई भगवान को बंसीवारे, ललना मोरे प्यारे
कहकर बुला रही है।

गोपियाँ सुबह उठकर दही मथ रही है और
माखन निकाल रही है।

लालजी कहकर उन्हें भोर होने का अहसास
करा रही है।

ग्वाल बाल सब माखन रोटी लेकर तुम्हारा
इंतजार कर रहे हैं।

मीराबाई श्रावण मास में भगवान कृष्ण के आने
के भाव को प्रकट कर रही हैं।

भगवान के आने की खुशी में मीराबाई आनंद
मंगल गा रही हैं।

प्रस्तुत पाठ के माध्यम से कवियत्री ने ब्रज की भोर का वर्णन किया है।

भगवान कृष्ण के प्रति ब्रजवासियों की अनन्य भक्ति का चित्र प्रस्तुत पाठ के माध्यम से दिखाया गया है।

मीराबाई की भक्ति भगवान के नाम जप और उनके आने की उम्मीद में ही पूरी हो जाती है।